ऊँ

दास्ताने जिन्दगी
जिन्दगी के बाद की

याद रखेगा ज़माना जिन्दगी में, जिन्दगी के बाद भी

महाप्रयाण

महान आत्मा

परम संत पूज्यवर डॉ. वी. के. सक्सेना

सहधर्मिणी

आशा सक्सेना

This is My Prayer

Give me the strength lightly to bear my sorrows
Give me the strength to make me
Faithful in services as you wish
Give me the strength to surrender
My strength and myself to whom you wish
Take my hands and make as your own
And use them for your work here on earth
Take my hands I give them to you
Open them for the service of your name
Prepare them for human needs as you wish me to do
I wish your name to be sown everywhere
So all may know the love you have given to them.

May God help me.

Your's ever
Asha Saxena

हम तेरी जुदाई को रो रो के सह लेंगे

साये में तुम्हारे हैं, किस्मत ये हमारी है।
कुर्बान दिलो जाँ हैं, क्या शान तुम्हारी है।
नक्शा बडा दिलकश है, सूरत बड़ी प्यारी है।
जिसने भी तुम्हें देखा, सौ जान से वारी है।
क्या नजर करुं मैं तुमको, क्या चीज हमारी है।
यह दिल भी तुम्हारा है, यह जाँ भी तुम्हारी है।
हमने तो तसव्वुर में, तस्वीर तेरी रख कर।
सौ आईने तोड़े हैं, तब दिल में उतरी है।
तुमने तो हजारों की, तकदीर सवाँरी है।
इस बार तो यह कह दो, अब तेरी बारी है।
हम तेरी जुदाई को, रो रो के सह लेंगे।
तुमने मेरी आँखों में, एक उम्र गुजारी है।
क्या हाल कहूँ मैं तुमसे, क्या अर्ज करूँ तुमसे।
सब आपको रौशन है, हालत जो हमारी है।

*****

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
1. दो शब्द	5
2. महान आत्मा का महाप्रयाण	7
3. विचार श्रृंखला सद् विचार पूज्यवर की कुछ कही कुछ अनकही बातों द्वारा अनूठा मार्गदर्शन	16
4. दर्द दिल की आवाज़	29

दो शब्द

न ख्याले दीनइमां, न ख्याले बंदगी है ।
तेरे बग़ैर जीना यह कैसी जिन्दगी है ।।

यह महाप्रयाण का पन्ना उस महान आत्मा की पुस्तक दास्ताने जिन्दगी जिसमें वो अकेले नहीं हैं, परम पूज्य लाला जी महाराज, परम पूज्य चाचा जी महाराज, विशेषकर उनके गुरुदेव परम पूज्य ताऊ जी महाराज, उनके पिता परम पूज्य बाबू जी महाराज जो उनके मुर्शिद-ए-कामिल थे एवं उनके सहोदर भाई पूज्यवर सेठ भाई साहब, वो सब विद्यमान हैं।

परम पूज्य (डॉ. वी. के. सक्सेना साहब) ने अपने गुरुदेव की हर छोटी-बड़ी बातें जो उन्होंने सहज रूप में भी कहीं थीं, उसको बहुत-बहुत वरीयता दी। उनके पूज्य गुरुदेव ने उनसे कहा था "बेटे अपने सब काम स्वयं पूरा करना चाहिए, किसी पर नहीं छोड़ना चाहिए। यहाँ तक कि अपनी औलाद पर भी नहीं।" इस बात को अन्तर्मन से स्वीकारते हुए मेरे पूज्य पति ने अपनी जीवनी दास्ताने जिन्दगी अपने जीवन के अनुभव, सपने, अपने बुजुर्गों द्वारा बताई हुई सब बातों को अपनी पुस्तक में अपने जीवनकाल में ही लिख दिया। इसी संदर्भ में अपनी समाधि भी बनवा ली। अपने शरीर के लिए वसीयत लिखकर सब कुछ पूरा कर दिया था। शरीर छोड़ने के बाद अब तक बस एक पन्ना उनके अंतिम यात्रा का रह गया जो उनके वश में नहीं था और अब मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ कि उनके महाप्रयाण को लिखकर पुस्तक को पूर्णता दे दूँ। उस घड़ी को उस क्षण को कलमबद्ध करना असंभव है क्योंकि जो आँखों ने देखा जो दिल ने महसूस किया, वह लिखा नहीं जा सकता, एक आकार शब्दों का दिया जा सकता है। पूज्य तुलसीदास जी ने ठीक ही लिखा है "गिरा अनयन नयन बिन वाणी।" वाणी के पास नेत्र नहीं जो देख सके और जिन नयनों ने देखा है उनके पास वाणी नहीं कि बता सकें। मेरा सारा जीवन बहुत सुख, संतोष और सुविधाओं में बीता। क्यों न बीतता मेरे जीवन साथी के रूप में मुझे कल्पतरु प्राप्त हो गये थे, जो हर इच्छा को पूर्ण करने में समर्थ थे। ऐसा नहीं कि जीवन में विषम परिस्थितियाँ न आयीं हों, परंतु विषम से विषम, गंभीर से गंभीर समस्याओं को अपनी अलौकिक सूझबूझ से सुलझाने का मंत्र मेरे पति थे। पुरानी यादें अर्थात भूत की यादें यद्यपि बहुत सुखकर हैं परंतु आज उन्हें याद करने में भी दुःख हो रहा है। आँसू बरबस निकल जाते हैं। आप कहते थे "भूत को भूल जाओ, वर्तमान को अच्छी तरह पूर्ण सूझबूझ, विश्वास के साथ जियो, भविष्य स्वयं अच्छा हो जायेगा।" उनकी ही बात शत प्रतिशत सच्ची है। भूत तो सदा दुःख देने वाला ही है, चाहे सुखमय हो या दुःखमय। आज जीवन में इन क्षणों में यही प्रयास कर रही हूँ कि उनकी कही बात को ही अंगीकार करूँ। भविष्य की मुझे कोई चिंता नहीं। अपनी देह से संबंधित बच्चे खुश हैं, आत्मनिर्भर हैं, पूर्ण संयत हैं, उनके जीवन में मेरी अब कोई भागीदारी नहीं है। सत्संग के वो बच्चे जो उनके बहुत प्रिय थे, वह भी अपनी-अपनी तरह से

उनको याद कर रहे हैं और उनके बताए रास्ते पर चल रहे हैं। उस काम को करवा लेने के लिए वह स्वयं समर्थ हैं, सक्षम हैं। मैं भी अपने वर्तमान को बनाने की ओर उन्मुख तो हूँ परंतु अकेले मेरे वश का कुछ नहीं, वह ही मेरे कर्म आधार थे। यदि मैंने सच्चे मन से उनसे नाता जोड़ा है तो मुझे भी पूरा विश्वास है कि मेरे अंतिम क्षण वह अवश्य आयेंगे। लोग जीवन जीने की कला (Art of Living) की शिक्षा दे रहे हैं, परंतु वास्तव में मेरे पूज्य पति ने सबके सामने Art of Death की परिभाषा दी है। शास्त्र भी कहते हैं जो अंत होता है वही मनुष्य के जीवन का नियंता होता है।

मैं उस दिव्य पुस्तक का एक पन्ना लिखकर उनके चरणों में अपना नमन, अपना प्रणाम और उनकी हस्ती जो किअवर्णनीय है उसका अनुकरण करने का प्रयास कर रहीं हूँ। अपने परम पूज्य बाबू जी का महाप्रयाण जब वो उनके अनमोल चरित्र के लिए लिखा रहे थे, आँखों से आँसुओं कि सतत धार बहते मैंने देखा है। बोला नहीं जा रहा था लगता था आज ही उनके परम पूज्य बाबू जी गये हैं। उनकी अनुगमिनी होने के नाते जब उनकी महान हस्ती का महाप्रयाण लिखने बैठी हूँ, आज वैसी ही स्थिति मेरे दिल की भी हो रही है। लगता है कोई कंधा मिल जाता जिस पर सिर रखकर मैं अपने दिल का गुबार निकाल लेती। पर कुछ नहीं मिला, बस चार लाइनें और कलम मिली है जिससे उनका महाप्रयाण लिखने कि हिम्मत कर रहीं हूँ। वह जहां भी हों मेरी इस टूटी फूटी भाषा में लिखे प्रयास को स्वीकार करें क्योंकि कहाँ वो और कहाँ मैं। आपके महाप्रयाण के दो शब्द लिखने का मैंने प्रयास किया है, आप उसे स्वीकार करें और आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि मेरे जीवन की डोर जो आप से बंधी है, उसे भी अपनी तरह अलौकिक विराम देने की कृपा कीजिएगा।

है तुम्हारे हाथ रक्षा, हूँ दुःखी संसार में।
शब्द साखी क्या सुनूं मैं, सुनते-सुनते थक गयी।
मुझको जीता अब न समझो, जीते जी मैं मर गयी।।

आपकी सहधर्मिणी
आशा सक्सेना

ॐ

कहत कबीर सुनो भाई साधो, हंस अकेला जाई।

महान आत्मा का महाप्रयाण

दिनांक 25 जुलाई 2019 दिन बृहस्पतिवार
स्थान - दिल्ली
तिथि - अष्टमी, समय - 5:00 बजे प्रातः

'आसमां' वाले अजब तेरा दस्तूर है।
हर जमीं पर आने वाला मौत से मजबूर है।।

मेरी जिन्दगी में यह दिन भी आएगा कि मैं अपने ही परम पूज्य पति की अंतिम यात्रा लिखूँगी, ऐसा तो शायद किसी पत्नी ने न किया हो। कठोरता की अंतिम सीमा ही आप लोग कहेंगे। मुझे यह लिखने में जितना दुःख हो रहा है, वह मैं व्यक्त नहीं कर सकती हूँ। न आप सब उस व्यथा को समझ सकेंगे। मेरे पति पूज्य डॉ. वी. के. सक्सेना साहब आप सबके भैया जी मेरे केवल पति ही नहीं थे, वे मेरे मुर्शिद भी थे। ऐसे मुर्शिद जिन्होंने मुझे बहुत कुछ बताया, सब कुछ बताने का प्रयत्न किया पर झोली ही मेरी तंग थी, उनके यहाँ कमी न थी। मेरे परम पूज्य गुरुदेव (परम संत डॉ. श्याम लाल सक्सेना) मेरे पूज्य बाबूजी ने मुझे दीक्षा के समय एक ही बात कही थी "**देख बेटी! तुम्हारी उपासना यही है कि तुम्हारे घर से कोई उपासा न जाये**" केवल यही शब्द कह कर आशीर्वाद दिया था। मैं नहीं जान सकी कि यह कैसा गुरुमंत्र है। आरंभ में यह करना मेरे लिए आसान नहीं था। लोगों के आने का समय नहीं होता, और मैंने कभी कुछ काम भी अपने विवाह से पहले नहीं किया था, आलस्य था। परंतु मेरे परम हितैषी पति ने मुझसे मेरे गुरुदेव का सौंपा कार्य करा लिया। धीरे-धीरे कालांतर में वह मेरी आदत में शुमार हो गया और मुझे इस कार्य को करने में आनंद सा आने लगा। परम पूज्य बाबूजी ने यह भी कहा था कि जो तुम्हारे पास उस वक़्त हो वह खिला दो पर प्रेम से खिलाओ। अब यह सहज प्रक्रिया हो गयी है। ईश्वर से प्रार्थना है कि जीवन के अंत समय तक इस कार्य को कर सकूँ। इसमें मेरी कोई प्रशंसा नहीं है। यदि मेरे पति ने सहज रूप से यह कराया न होता तो मैं कदापि यह न कर सकती थी।

गुरुजनों की बातें लिखवा-लिखवा कर उन महान पुरुष ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया। लिखते-लिखते ऐसा लगता था वह मेरे अंदर उतर रहीं हैं। आज उनके जाने के बाद समझ में आ रहा है कि लिखाते समय उनकी मुद्रा शांत, गहरी तथा आँखें बंद, एक अजीब आकर्षण रहता था।

उस बीच यह जानने के लिए कि मैंने क्या लिखा है, जब वो आँख खोल कर मेरी तरफ देखते थे तो उनकी दृष्टि से मेरे अंतर्मन का कलुष धुलता था। उनके इतने बड़े उपकार का मैं अकिंचन क्या बदला दे सकती थी। सब कुछ तो उन्हीं का है, मेरा है भी क्या। आरंभ के दिनों में रिश्ते माता-पिता में बहुत अनुरक्त रही पर धीरे-धीरे मेरा सिमटाव होता गया और जीवन उन्हीं के इर्द-गिर्द घूमने लगा। हमारी सुबह पूज्य ताऊ जी, पूज्य बाबूजी से होती थी और दिन के कार्यकलाप अधिकतर सत्संग के बच्चों, भाई-बहनों के दु:ख, सुख के वार्तालाप में गुजरने लगा। इस तरह पूजा को जीने वाले मेरे पति ने मुझे संवेदनशील बना दिया। किसी के जरा से दु:ख से मेरे आँसू निकलने लगे और बहुत दु:ख होने लगा। इतना दु:ख कि कई बार खाना भी छोड़ देती थी। उन्होंने कई बार मुझे समझाया "ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, इस तरह दु:खी होना उसके काम में बगावत है, ऐसा नहीं करना चाहिए।"

मेरा विवाह 18 वर्ष की आयु में हुआ था। उम्र के करीब-करीब 60 वर्ष मैं इनके साथ-साथ रही। हमारी वैचारिक विभिन्नता तो पहले रहती थी। यह पारमार्थिक थे, मैं दुनिया में हर चीज का शौक रखने वाली मसलन गाना बजाना, शादी ब्याह में जाना-आना, परंतु धीरे-धीरे वह ही भारी पड़े, मेरे सारे शौक स्वतः ही समाप्त हो गये। उन्होंने कभी भी मुझे मना नहीं किया। मौन रहकर पता नहीं कैसे क्या किया कि मुझे वह सब अच्छा नहीं लगने लगा। बच्चे पढ़ लिख गये। किसी भी चीज से लगाव नहीं रहा। शादी ब्याह में इनकी केवल शारीरिक उपस्थिति ही थी। अपने पोते पोतियों को बहुत प्यार करते थे पर कभी उनमें मोह नहीं देखा। अपने गुरुदेव, अपने बाबूजी से बढ़कर कोई नहीं था। मेरी शादी परम पूज्य ताऊ जी महाराज ने मुझ पर उपकार कर अपने प्रिय नन्हे से कराई थी और मुझसे अकेले में बैठाकर कहा था "देख बेटी! जिस बच्चे की माँ नहीं होती वो दुनिया की बड़ी नेमत से महरूम रह जाता है। वो प्यार का भूखा रहता है कभी ऐसा कोई काम मत करना जिससे उसे दु:ख हो, मेरा तुमको बहुत आशीर्वाद है।" मुझे बहुत संतोष है कि उनकी ही दया से मैंने अपने पूरे 60 साल के साथ में कभी उनकी किसी बात को टाला नहीं, मन से किया बेमन से किया परन्तु सदा उनके काम को वरीयता दी। उन्होंने मुझसे और कुछ चाहा भी नहीं, चाहा तो पूज्य ताऊ जी की चर्चा, उनका काम, पूज्य बाबूजी की चर्चा, उनका काम। हँसने की बात है जब मेरी तबीयत बहुत खराब थी तो कहने लगे "भाई अब भंडारा करा लो, फिर चली जाना।" कहाँ जाना था मुझे, स्वयं ही चले गये। यह संक्षेप में मेरे शब्द हैं।

अपने ही पति का महाप्रयाण लिखने वाली मैं प्रथम पत्नी हूँगी, पर अपने जीवनकाल में समाधि बना देने वाले वह प्रथम पुरुष भी होंगे। आत्मकथाएं तो बड़े-बड़े कई लोगों ने लिखी हैं, पर जीवित रहते हुए समाधि बना लेने वाले वह एक अकेले एकमात्र पुरुष थे। मैंने किसी को नहीं सुना। यदि किसी ने बनाई हो तो मुझे मालूम नहीं। ऐसे आश्चर्यजनक सोच रखने वाले महापुरुष की पत्नी होने के नाते उन्हीं की प्रेरणा से मेरे मन में आया कि दास्ताने जिन्दगी तो उन्होंने स्वयं लिख डाली, एक छोटा सा भाग उनके जीवन के अंतिम यात्रा का ही रह गया जो उनके वश में नहीं था,

परंतु उसकी झलक उन्होंने दास्ताने जिन्दगी के पृष्ठ 270-271 पर लिख कर सबको बता दी। कौन ऐसा है जो लिख दे चार साल पहले ऐसे स्पष्ट शब्दों में पूरे दावे के साथ कि उनका अंजाम आखिरत बाखैरियत और बाखबर अपने गुरुदेव की याद में होगा। इसमें कोई शक शुबहा की गुंजाइश नहीं। यह उनकी गुरु भक्ति की पराकाष्ठा है। उनके बार-बार कहे शब्द और आप लोगों ने बार-बार सुने कि मैंने अपने गुरुदेव की कृपा से जो चाहा, वो किया। उन्होंने मेरी सब इच्छायें पूरी कर दीं, कोई इच्छा नहीं पूरे मेंटल पीस में हूँ। यह शब्द नहीं थे, वो इसी पृष्ठभूमि में जी रहे थे। पूर्ण संतुष्ट I am the most satisfied man 8^{th} July रात को डेढ़ बजे अनमोल के घर दिल्ली में सिकन्द्राबाद से लौटकर कहा था, लिखवाया था।

अपनी अंतिम यात्रा के लिए वह वैसे तो 2008 से ही तैयारी में लग गये थे। परमार्थ के ही काम में लगे रहना, नए सेंटर बनाना, हर जगह के लोगों को उत्साहित करना, उसके लिए अथक परिश्रम करना, यहाँ तक कि आरंभ में कई जगह के निमंत्रण पत्र तक हमसे लिखवा कर दिए। कोई परेशानी हो तो बताओ, कहकर लोगों में उत्साह भरना। वर्ष 2015 में 01 सितंबर के स्वप्न और देवस्थली आश्रम में पूजा की अनुभूति ने इन्हें पूरा आभास वापसी का दे दिया। मैंने सुना भी, लिखा भी, पर मन ने कहीं कहा अरे पूज्य बाबूजी ने भी 1981 में कहा था अब वापसी का वक्त आ गया है, परंतु रहे न 1987 तक। जब कभी यह दृढ़ता से कहते आप सब ने कानपुर में देखा यह साल वापसी का है, मेरा दिल कांप जाता था। मुझे श्री जे.पी. बाजपाई जी ने कहा कुछ नहीं होगा, भाई साहब को, वह 2021 तक रहेंगे। न मानते हुए मेरे मन ने डरते-डरते मान लिया और जब खाना वगैरह खाने लगे तब मन काफी आश्वस्त सा हो गया परंतु मेरे भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया।

इस वर्ष लखनऊ के भंडारे से ही वह कहने लगे थे "मैं एक्सटेंशन पर चल रहा हूँ Latest by August परंतु कहने की मुद्रा इतनी हल्की हँसते हुए जिसने उनके कथन की गंभीरता को मन तक पहुँचने नहीं दिया। दिनांक 04 मार्च, 2019 रविवार को देवस्थली आश्रम में अपने गुरुदेव की स्मृति स्थल पर फूल चढ़ाते समय उन्हें चक्कर आया और वह अस्वस्थ हो गये। हम लोग उनको लखनऊ के सिविल हॉस्पिटल ले गये, वहां केवल एक दिन रुकने के बाद स्वत: अपनी मर्जी से घर चले आए और कहने लगे कि केवल Weakness (कमजोरी) है, कोई तकलीफ नहीं है। नियमित जीवन के कार्य-कलाप करने लगे, पूजा बहुत बढ़ा दी। 10:00 बजे या 10:30 बजे सुबह समाप्त होने वाली पूजा 11:30 से 12:00 बजे तक ध्यानस्थ, एक मुद्रा में बैठे रहने लगे। उसके बाद बहुत थकान महसूस करते थे। अतुल (बड़े बेटे) ने बहुत बार कहा Strain कम करिये। अच्छा कह देते, पर कम नहीं किया।

दिनांक 14 मार्च की रात्रि को एकाएक उनको बहुत Suffocation feel हुआ। अतुल (बेटे) ज्योति (बहू) फौरन मेडॉक्स हॉस्पिटल 3:00 बजे रात्रि को ले गये। डॉक्टर चौबे जिन्होंने ऑक्सीजन आदि से इमरजेंसी उपचार किया, (ईश्वर उन्हें सदा सुखी रखे) सलाह दी कि बड़े हॉस्पिटल ले जाइए। हम लोग पहले सिविल फिर मेडिकल कॉलेज के लॉरी हॉस्पिटल में ले गये। वहाँ एक दिन

ही रुके, उनको कानपुर समाधि पर जाने की रट लगी थी। तीन हॉस्पिटल से होते हुए डॉक्टर्स के लाख मना करने पर यहाँ तक कह देने पर कि आपका हार्ट फेल कर रहा है, वह नहीं माने। ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्तित्व था उनका। ऑक्सीजन सिलेंडर का प्रबन्ध किया गया। गाजियाबाद से डॉ. शर्मा जी के बहुत मना करने पर भी यह कहने लगे, वह हमारी अधिक चिंता कर रहे हैं, इसलिए कह रहे हैं। अतुल से कह दिया हम जाएंगे, तुम जो इंतजाम करना चाहो करो। वह चले गये, चले आए, खूब प्रसन्न और आश्चर्य की बात है, लौटकर तबीयत बहुत सँभल गयी। कानपुर समाधि से लौटकर वो बहुत थक गये थे। बहुत कहने पर भी कुछ नहीं खाया और कहा सोना चाहता हूँ और सो गये। मेरे छोटे देवर, छोटे भैया रुड़की से कानपुर समाधि पर आये थे और हमारे साथ ही लखनऊ वापस आये। उन्हें रात को रुड़की जाना था। हम दोनों घर के launge में बैठे थे। मैं बहुत सजग थी। कमरे में जरा सी आवाज हुई। मैं जा ही रही थी कि भैया चले गये। मैं बाहर रुक गयी। जब वो कमरे से लौटे तो उनकी आँखों में आँसू थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि एक बार पूज्य बाबू जी सो रहे थे। मैं कमरे में गया तो देखा कि उनके सिर के चारो ओर प्रकाश है। घबराकर बाहर आ गया। उन्होंने परम पूज्य बाबू जी से पूछा। शायद उस समय उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनको बाद मैं बताया कि जब किसी कि आत्मा दुनिया से उपराम हो जाती है और दुनिया छोड़ना चाहती है यानि दुनिया छोड़ने वाली होती है तब ऐसा ही प्रकाश दिखता है। आज ऐसा ही प्रकाश भाई साहब के सिर पर देखा है। इसी कारण उनके नेत्र आँसुओं से भर आये थे। मैंने सुनी उनकी बात, मन में बड़ी पीड़ा भी हुई। वातावरण बोझिल हो गया, परन्तु फिर यंत्रवत चलने लगा।

फतेहगढ़ भंडारा आ गया, वही रटन। फतेहगढ़ वाले डॉक्टर साहब का सुझाव, हम लोगों का कैसे करें-कैसे करें, खाना बिल्कुल न खाना, परंतु वह हिमालय की तरह अडिग प्रतिज्ञा वाले पुरुष थे। सबकी सुन रहे थे मौन, परंतु हर वर्ष की भाँति अपनी गाड़ी के आगे वाली सीट पर बैठ कर फतेहगढ़ चले गये। सब समाधियों पर गये। पूरा भंडारा किया और शांत मुद्रा में लौटकर बड़ी संतोष की सांस ली।

तैयारी 18 मई की थी, अब थी अपने गुरुदेव के निर्वाण दिवस की। उनका नाम लेते ही इन दिनों कभी-कभी आँसू आ जाते थे। इन दिनों कभी-कभी हमसे कहते थे दिल में एक बड़ा दर्द है कि पूज्य बाबूजी की मैं और आर्थिक सेवा कर सकता था पर न कर सका। इसका अफसोस है। इसीलिए शायद इन दिनों खूब पैसा जरूरतमंदों को बांट रहे थे। दिनांक 18 मई 2019 को बहुत तेज बुखार था परंतु आश्रम गये। बहुत कमजोर थे, उसी कमजोरी की हालत में परम संत बाबू बृजमोहन लाल जी की समाधि पर गये। सब उन्हें आराम करने की सलाह देते पर वह सतत् कार्यरत रहे। दिनांक 18 मई का भंडारा समाप्त होते ही दिल्ली जाने की रट लगा दी। पूज्य भाई साहब का जन्मदिन भंडारा दिनांक 03 जुलाई तथा बुलंदशहर भंडारा सिकन्द्राबाद जाना, उनके एजेंडा में आ गये। कहीं मेरा दिल दिल्ली जाने का नहीं कर रहा था। एक Intuition सा हो रहा था, कहीं दिल्ली में न कुछ हो जाये। सारे संशय, बकझक, प्रार्थना, समझाना सब किया पर वह नहीं माने और अंततः इस घर से बी-1/26 सेक्टर के, अलीगंज से डेढ़ बजे दिन में 26 तारीख 2019

जून को दिल्ली के लिए फ्लाइट द्वारा चल दिये। लखनऊ से, घर से जहाँ उन्होंने इतने वर्ष बिताए थे, सदा-सदा के लिए स्थूल रूप से विदा ले ली।

केवल डॉ. शर्मा और अनमोल का मन रखने के लिए दिल्ली जाकर दिनांक 29 जून को डॉ. खलील उल्लाह हार्ट सेंटर में दिखाया। उन्होंने कहा “आप तो बहुत अच्छे हैं, रेस्ट करिये, डायबिटीज कंट्रोल करिये बस”। धीरे-धीरे बहुत अच्छे होने लगे, खाना खाने लगे, सब कुछ, मैच देखने लगे। एन.सी.आर. और गाजियाबाद के बच्चे आते, बड़े खुश रहते, दोनों समय खूब पूजा होती थी। सब कुछ बहुत अच्छा ही अच्छा रहा। दिनांक 03 जुलाई 2019 का भंडारा हो गया। दिनांक 07 जुलाई का बुलंदशहर का भंडारा भी हो गया। सिकन्द्राबाद आये, आँगन में बैठकर बहुत खुशी से सबको अपने बचपन तथा उन दिनों की बातें बतायीं जो इस आँगन में उन्होंने बिताये थे। परन्तु जब वहाँ से विदा लेना था तब फिर समाधि वाले कमरे में वो, मैं और बब्बू भैया (ईश्वर उनको पूर्ण शांति बख्शें) साथ थे। मैंने, स्वयं उन्होंने और बब्बू भैया ने समाधि पर माथा टेका। अपने कुर्ते कि जेब से कुछ लिखा हुआ कागज निकाला और उनकी समाधि पर रक्खा और फिर उठाकर जेब में टुकड़े टुकड़े करके रख लिया। आँखों में आँसू भरकर कहा यह मेरा आपको आखिरी सलाम है। बब्बू भैया ने सांत्वना भरा हाथ उनके कंधे पर रखा और हम लोग बाहर आ गये। बाहर पूरे प्रसन्न मुद्रा में निकले थे। लौटकर बड़े खुश थे और लौटते समय रास्ते में ही सबके सामने जो गाड़ी में थे, यह बता दिया कि “अगर हमें कुछ हो जाये तो आश्रम ले जाना”। सब स्पष्ट कह रहे थे। मन बोझिल हो जाता, इन बातों से, पर वह हर पांच-छ: दिन के अंतराल में कुछ ऐसा कहते थे। दिन कभी दु:ख, कभी संशय, कभी विश्वास के बीच कटने लगे। उनके सामने जाते ही मेरे आँसू निकलने लगते थे, इसलिए मैं उनके सामने से हट जाती थी और जब दिल का गुबार शांत हो जाता तो फिर उनके पास बैठ जाती थी। वैसे देखने में वह दिल्ली में बड़े खुश थे, जिन्होंने देखा है वो इसके साक्षी हैं। सब लोग आते-जाते रहते, सबको “खूब खुश रहो” का अंतर्मन से आशीर्वाद देते रहते। डॉ शर्मा गाजियाबाद, चि. कुलदीप श्रीवास्तव, मुरलीधर, गौरव, पवन राय, योगेश धामा का आना बहुत रहा रोज। वैसे तो वैभव, दिनेश शर्मा, अंकुर, अमित, अनूप, तनु, प्रीति और सभी का आना उन दिनों खूब रहा। पंकज, अनुपमा, बेबी आदि भी मिले। ग्वालियर से ज्योत्सना, उनका पूरा परिवार, डॉ. राजीव, कहने का मतलब है, खूब लोग आते रहे और वह भी सबको खूब पूजा करा रहे थे। प्रेम बांट रहे थे। रमा, नगेंद्र भैया आये, उन्हें अपने साथ बड़े प्रेम से खाना खिलाया। यह शायद 22 जुलाई या 23 जुलाई थी। ऊपर से ऐसे दिखने वाले वो महापुरुष अपने गुरुदेव में लीन बैठे थे।

24 जुलाई को डॉक्टर शर्मा अपने परिवार सहित 5:00 बजे शाम को आये। बड़े खुश, उन्हें पास बैठा कर सरहिंद की समाधि तथा अन्य सपने अनुभूति की बातें करते रहे। मन ही मन उन्हें खूब आशीर्वाद दिया, उनकी लाई हुई रबड़ी सबके साथ खाई। उन्हें छोड़ने लिफ्ट तक भी गये। कोई कह सकता था कि चंद घंटों में वह महापुरुष इस फानी दुनिया को छोड़ देंगे। रात में 2 बजे तक अनमोल उनके पैर दबाते रहे और वो बार-बार कहते रहे कि जाकर सो जाओ जब जरुरत

होगी तो बुला लेंगे। दिनांक 25 जुलाई को 4:30 बजे सुबह उठे, टॉयलेट गये, हाथ पैर धोये, माला जो जरा भी समय मिलता उठा लेते थे, उठाई और बिस्तर पर बैठते समय बिस्तर पर ही गिर गये, उठ भी गये, फिर लेट गये "हे गुरुदेव दया करो, से अपनी वाणी को विराम दे दिया। चिर निद्रा में सफेद कपड़ों में शांत हो गये, न किसी प्रकार की शरीर में कंपन, न हिचकी, न कोई स्पंदन, एकदम शांत।

दिनांक 25 जुलाई, दिन बृहस्पतिवार सुबह 5:00 बजे अपने पुत्र अनमोल के घर अपनी लीला समाप्त कर दी। मेरा भाग्य देखिये, मैंने अपने इतने बड़े जीवन काल में अस्पताल के कैंपस में रहते हुए भी कभी किसी की मौत नहीं देखी थी। देखी तो अपने पति की उनके बिल्कुल पास उनका हाथ मैंने सहलाने के लिए हाथ में रखा था, अचानक मुंह से एक ज्योति निकली और आँखें फटी-फटी रह गयीं, प्राण अपने प्रीतम के चरणों में चले गये थे।

उस रात मुरलीधर वहीं रुके हुए थे। उन्होंने सबको इस दुखद समाचार की सूचना दी। पल भर में यह खबर प्रेमियों के पास पहुँच गयी। भारी संख्या में लोग गाजियाबाद, नोएडा तथा दिल्ली से आ गये। एक सेकंड को तो लगा कलेजा फट जायेगा, फिर सभी बच्चों, अनमोल को उनकी पत्नी आदि को बहुत विकल देखकर मैंने ही धीरज रखा या ईश्वर ने धीरज दे दिया और मैंने इन सबसे कहा रोने-बिलखने को उम्र पड़ी है पहले जो करना है, करो।

उधर लखनऊ में अतुल, बच्चे सब बिल्कुल बेजार हो रहे थे। अजय, बीना, सत्संग के सारे लोग आने को तैयार। मैंने ही सबको बताया कि हम लोग आ रहे हैं, ऐसी ही उनकी इच्छा थी। आश्रम ले जाना, यह उनका आदेश था जो उन्होंने मुझसे 07 जुलाई को ही बता दिया था।

आपने उस दौरान गाजियाबाद के 57वें भंडारे के लिए एक लेख लिखवाया था जो कुलदीप ने लिखा था और सबको बँटवाने के लिए कहा था। पंकज ने जो नये कमरे बनवाए थे, उनके लिए कुलदीप से फोटो बनवाए थे। कहने का अर्थ है कि एक मिनट भी खाली नहीं बैठे, यह उनकी आदत थी। पहले भी जब सर्विस में थे, आला रखते ही माला उठा लेते। माला रखते ही फिर आला या ध्यान पूजा, चर्चा या सेवा यही दिनचर्या रहती थी। खाना खाते ही समय अपने में सिमट पाते थे, या अपनी बात कह पाते थे।

अनमोल कुछ संयत हुए, इंतजाम हुआ और हम लोग गाड़ी द्वारा लखनऊ पहले घर, फिर आश्रम में करीब 07:00 बजे सायंकाल पहुंच गये। उनके पावन पार्थिव शरीर को बड़े कमरे में रखा गया। लोगों का जनसमूह उमड़ पड़ा, उनके प्रेमी जैसे भी हो, फ्लाइट, गाड़ी या ट्रेन से सब पहुँच गये। उन्होंने अपनी पुस्तक दास्ताने जिन्दगी में 270-271 पृष्ठ पर अपनी नश्वर देह की भी वसीयत की थी। यद्यपि पुस्तक की लिखी बात का बिल्कुल ध्यान नहीं था, पर ईश्वर की दया से सब वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने चाहा था और लिखा था। लखनऊ में हजारों अश्रुपूरित आँखें अपने आराध्य के लिए व्याकुल थीं। दूसरे दिन उनके पावन पार्थिव शरीर को नहला धुला कर उनके स्वनिर्मित

आश्रम के पूजा हाल में रखा गया। सभी लोगों ने श्रद्धांजलि दी। बच्चों में घर के तथा अन्य सत्संग के बच्चों ने ओम राम जय राम जय जय राम की श्रृंखला बांधकर अपने पूज्यवर को विदाई दी, उस प्रेम करने वाले को जो इन सबको देखते ही हँसी सी सहज मुद्रा में आ जाते थे। इतनी भीड़ थी, पर सब संयत थे और उस आश्रम से जिसे उन्होंने अपने पूज्य गुरुदेव, पूज्य बाबूजी, पूज्य भाई साहब की पुण्य स्थली बताई थी, वहाँ से अपने बच्चों के कंधे चढ़ चले गये, सदा के लिए।

लखनऊ के बैकुंठधाम में विधिवत उनके बड़े पुत्र अतुल कुमार ने मुखाग्नि दी। कहते हैं एक बड़ी भारी भीड़ एकत्र हुई थी, जिसने सुना दौड़ा चला आया। अस्थियाँ चुन ली गयीं। शनिवार को अतुल द्वारा गंगा जी में प्रवाहित कर दी गयीं। उनकी अस्थियों को बनारस में छोटे भैया (पुत्र पूज्य ठाकुर रघुराज सिंह) ले गये और वहाँ के अन्य प्रेमी डॉ. सतीश आदि ने अपने पूज्य गुरुदेव की इन पावन अस्थियों को गंगा के पावन जल में अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा के साथ प्रवाहित किया। गढ़मुक्तेश्वर की पवित्र पावन गंगा में जहाँ परम पूज्य बाबूजी महाराज, पूज्य भाई साहब का दाह संस्कार हुआ था, वहाँ उनके पुत्र अनमोल, उनकी पत्नी तथा पुत्र अंश और मैं भी साथ गयी थी, वहाँ विधिवत उनकी पावन अस्थियों को श्रद्धा तथा अश्रुपूरित नेत्रों से नमन कर पवित्र गंगा की भेंट कर दीं। पवित्र गंगा ने जैसे सहर्ष गोद में रख लिया। डालते ही आँखों से ओझल हो गयी।

जो सामाजिक कार्य होता है, वह सब किया गया। सभी लोग आश्रम में रुके रहे। अजय, बीना, अनमोल की पत्नी आशु, बेबी, अमिता, उनका बेटा अमित तथा ग्वालियर की ज्योत्सना, उनका बेटा यश, बनारस के दो बच्चे तथा अन्य कई लोग पूरे 13 दिन तक रुके रहे । रोज सुबह-शाम ओम शांति का जाप सभी भाइयों ने किया। श्री के. डी. श्रीवास्तव भाई साहब तथा श्री जे. पी. बाजपेई जी का, श्री त्रिभुवन सिंह जी का विशेष तथा सभी लोगों का बहुत सहयोग रहा। वहीं पास में रहने वाले मिश्रा जी द्वारा नियमित रामायण पाठ होता रहा। दिनांक 07 अगस्त, 2019 को आपकी तेरहवीं थी। पूरे भंडारे का दृश्य था, सभी की आँखें नम थीं, उनके सब भाई बब्बू भैया, छोटे भैया, मुन्नी बीबी, बेबी, उनके बच्चे, बसंत भैया तथा अन्य मेरे घर के भी सभी भाई-बहन आए थे। समाज की परंपरा के अनुसार पंडितों को भोजन तथा दान दिया गया। इस काम में श्री राजेंद्र गोयल भैया ने सारा भार संभाल लिया। ईश्वर उनको इस नेक काम का नेक बदला दे। सबके बीच उनके द्वारा स्वनिर्मित समाधि में रघुपति राघव राजा राम की उच्च ध्वनि में मैंने तथा उनके दोनों पुत्र अतुल, अनमोल, अंश, अर्थ, रूपाली, काव्या तथा दोनों बहुओं ने ज्योति, आशु, बब्बू भैया, पंकज, अनुपमा, बेबी, अरुण जी, श्यामल, गौरिका, पार्थ सबने तथा प्रेमी जनों ने उनकी अस्थियों को अन्तिम वंदन, अश्रुपूरित नेत्रों से किया। मेरी तो उस समय वही स्थिति हो गयी थी, जब दिल्ली में उन्होंने शरीर छोड़ा, कलेजा फटने लगा, लगा प्राण निकल जाते तो कितना अच्छा होता। क्या करेंगे जी के। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। सारा प्रबंध देख रही थी। सब कुछ किया। सब लोग विदा हो गये। लगा सब खत्म हो गया परंतु यह ईश्वर की धरती स्वचलित यंत्र की भाँति चलती रहती है, कभी नहीं रुकती। गरीबों को मिठाई, पूड़ी बाँटी गयी। फतेहगढ़ से विनय भैया, दिनेश भैया, सुमन

जी, समीर भैया, कानपुर से प्रभात भैया का परिवार, ऐशबाग से पूज्या भाभी जी पत्नी पूज्य ओंकार नाथ जी, उनके छोटे भाई उनकी पत्नी, तथा वहाँ के बहुत से प्रेमी भाई और ग्वालियर से स्व. राजीव जौहरी जी आए थे। फतेहगढ़ से बहुत लोग आए थे, जिनको मैं पहचान न सकी। पूज्य श्री हरिवंश लाल त्रिपाठी जी के यहां से भी कुछ सत्संगी जन एवं मथुरा सत्संग के भी लोग आए थे, मैं पहचान न सकी परंतु आभारी अवश्य हूँ।

इस तरह उनकी अंतिम यात्रा पड़ाव ठहर गया। दिनांक 25 अगस्त 2019 को ठीक एक महीने बाद बच्चों ने आँसुओं में डूबकर एन.सी.आर. भंडारा मनाया। अपने ताऊ जी को अपने भैया जी को खूब याद किया, खूब रोये, पता नहीं उन्होंने देखा या नहीं। देखा तो जरूर होगा।

*****

जिन्दगी दूभर हुई है आपके जाने के बाद

प्रणाम उस श्रेष्ठ व्यक्तित्व को जिन्होंने हमें परमार्थ के मूल्य सिखाये। प्रणाम उस अस्तित्व को जिन्होंने जीवन के सही पाठ पढ़ाये। प्रणाम उन प्रेरक वचनों को जो हमने आपसे पाये। प्रणाम उन सार्थक कदमों को जो आपने हमें चल के दिखाए। प्रणाम हमें हिम्मत, उत्साह, सच्चाई, ईमानदारी सिखाने वाली हर बात को। प्रणाम उस पुण्य आत्मा को, शत-शत बार प्रणाम आपको।

हे पूर्ण सच्चाई के महापुरुष हे दयालु!
आप माने या न माने मेरे स्वामी आप हैं।
स्वाँस लेती हूँ तो ये महसूस होता है मुझे।
जैसे मेरे दिल की हर धड़कन में शामिल आप हैं।
गम नहीं जो लाख तूफानों से टकराना पड़े।
मैं वह किश्ती हूँ जिस किश्ती के साहिल आप हैं।।

अंत में यही कहना चाहती हूँ जो शत प्रतिशत सत्य है –

तेरे तसव्वर में मेरे प्यारे, बहुत-बहुत गम उठा रहे हैं।
तुम्हारा सब कुछ तुम्हीं को देके, हम अपनी हस्ती मिटा रहे हैं।
न पहले कुछ थी हमारी हस्ती, तुम्हीं से सजती थी मेरी बस्ती।
तुम्हारी हस्ती का ले सहारा, हम तेरी दुनिया निभा रहे हैं।।
बहुत कठिन है तुम्हारी मंजिल, बहुत कठिन है डगर तुम्हारी।
तुम्हारी वाणी का ले सहारा, कदम कदम हम बढ़ा रहे हैं।
तुम्हीं हो मेरे मार्गदर्शक, तुम्हीं हो मेरे पथ के प्रदर्शक।
तुम्हीं ने दिखलाई सारी राहें, अब क्यों अकेले चला रहे हो।

न कुछ बनेगा मेरे बनाये, न कुछ सधेगा मेरे सधाये।
प्रतीक्षा दिन रात है अब हमारी, कब तुम वापस बुला रहे हो।।
आसरा इस जहाँ को मिले न मिले, मुझे तेरा सहारा सदा चाहिए।
चांद तारे फलक पर दिखे न दिखे, मुझे तेरा नजारा सदा चाहिए।।

यही दास्ताने जिन्दगी का छूटा पन्ना था, मैंने अपनी अल्प बुद्धि, टूटी फूटी भाषा में पूरा करने का प्रयत्न किया है और क्या कहूँ, जहाँ वाणी मौन हो जाती है, वह मंजिल आप हैं।

आपकी अनुगामिनी
सहधर्मिणी आशा सक्सेना

विचार श्रृंखला सद्‌विचार
पूज्यवर की कुछ कही कुछ अनकही बातों द्वारा अनूठा मार्गदर्शन

इस महाप्रयाण के साथ यदि मैं पूज्यवर की कुछ कही कुछ अनकही बातों द्वारा अनूठा मार्गदर्शन न लिखूँ तो पन्ना पूरा नहीं होगा क्योंकि यही तो उनका व्यक्तित्व है। इसी में तो उनका पूरा परमार्थ छुपा है। यही तो मेरे बच्चों का मार्गदर्शक है।

परमार्थ की अनूठी परिभाषा करने वाले उन महापुरुष ने परमार्थ और सद्‌गुणों की बारीकी से बहुत सरल ढंग से विवेचना की है। बिल्कुल सहज जिसमें कोई दर्शन नहीं, कोई शास्त्र नहीं। उन्होंने यह एहसास दिलाया कि सद्‌गुणों का विकास होना सद्‌विचारों का आना, यह अंतर्मन की सफाई से होता है। इससे आत्मा बलवती होती है। यह परमार्थ की पृष्ठभूमि हो सकती है परंतु परमार्थ तो कुछ और है। आत्मा का साक्षात्कार जो बिना सद्‌गुरु के नहीं हो सकता वही परमार्थ है।

पूज्यवर का अनूठा मार्गदर्शन, जो मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है या दूसरों का दृष्टांत जो मेरे सामने हुआ है, वह लिखने का प्रयास कर रही हूँ:-

"उन्हीं की मेहरबानी का, हमें हर पल भरोसा है।
अगर उनकी इनायत हो, तो मुश्किल काम आसां है।।"

(1)

वर्ष 2006-07

पूज्यवर ने बहुत सी अनकही बातें अपनी डायरी में समय-समय पर स्वयं लिखीं या लिखवाई हैं। उनकी डायरी से उनके ही शब्द लिख रही हूँ:-

"इन दिनों मैंने सत्संग की सुविधा में कई नए सेंटर बनाए, लोगों के जिम्मे काम दिया। बहुत से लोगों को दीक्षा दी। दीक्षा ही नहीं दी, उनके लिए दुआ भी की और करता रहूँगा।

यह सेंटर आदि का काम परमार्थ नहीं है परंतु परमार्थ के लिए उपयोगी भूमि एवं वातावरण बनाना है। सेंटर पर बराबर सत्संग होने से अब भंडारों में स्थूल तत्व नहीं के बराबर है और सूक्ष्म हावी रहता है और लताफत भी खूब महसूस कर रहा हूँ, बाकी जिसका भंडारा है वह स्वयं जाने।"

*****

(2)

एक बार वर्ष तो याद नहीं, परंतु जनवरी भंडारे के बाद हम सब लोग बदस्तूर देवस्थली आश्रम, रविवार पूजा के लिए गये। आश्रम के गेट के अंदर पैर रखते ही आश्रम फूलों से भरा इतना सुंदर दिखाई दिया कि मन में अकस्मात आया कि इतना सुंदर आश्रम हम लोगों ने कैसे बना लिया। मन में एक अजीब खुशी थी। हाल में पूजा में बैठते ही आपने कहना शुरू किया – "आश्रम वगैरह बना लेने से परमार्थ या पूजा का कोई संबंध नहीं है। आश्रम तो कोई भी बना लेगा जिसके पास पैसा हो। यह सब बनाना तो केवल इसलिए है कि जब हम एक जगह पूजा ध्यान करते हैं तो वह Charge हो जाती है। जमीन ईश्वर तत्व को कबूल कर लेती है जिससे पूजा में आसानी होती है। दूसरी बात यह भी है पूजा तो पेड़ के नीचे भी होती है, हो सकती है परंतु वक्त ऐसा आ गया है कि इस पीढ़ी की शारीरिक अवस्था ऐसी नहीं रही, उनको आराम व व्यवस्था चाहिए। इसलिए यह आश्रम उपयोगी हो जाता है, नहीं तो लोग व्यवस्था के अभाव में आयेंगे ही नहीं। एक अच्छा काम है, पैसे का सदुपयोग भी है बस।" मुझे बहुत ग्लानि हुई कि मेरे मन में यह अहं भावना क्यों आई।

*****

(3)

दौराने दिल्ली माह जून में सत्संग के दो भाई साथ-साथ मिलने अनमोल के घर आए। उन दोनों के जाने के बाद मैंने कहा देखिए यह दोनों भाई कितने अच्छे हैं इनका छोटा भाई कितना खराब स्वभाव का निकला। इनको मेरी बात अच्छी नहीं लगी। कहने लगे "तुमने उसकी बुराई ही क्यों देखी, कुछ अच्छाई भी होगी, वह तुम्हें नहीं दिखी। कभी-कभी मनुष्य अपने पूर्व जन्म के कर्मों से ऐसा विवश हो जाता है कि उससे बुरे कर्म न चाहते हुए भी हो जाते हैं।" उनकी मुद्रा गहन हो गयी। मैंने तुरंत कहा हाँ, आप ठीक कह रहे हैं। मुझसे गलती हो गयी, वह चुप रहे।

*****

(4)

एक बार सुबह उठते ही कुलदीप आ गये। प्रातः के 7:00 बजे थे। रामायण पढ़ाई फिर ध्यान हुआ। किताब नवनीत (परम पूज्य ताऊ जी महाराज द्वारा लिखित) पढ़ाई। बहुत अच्छी पूजा हुई। वह नाश्ता करके चले गये। उसके बाद हमसे कहने लगे "जिन्दगी ने वक्त नहीं दिया है नहीं तो मैं इन बच्चों को नमूना बनाकर पेश करता। खैर परम पूज्य बाबूजी महाराज के हाथ पर मैंने इन सब को बैत किया है, वह हाथ बहुत मजबूत हैं। मेरे गुरुदेव ने मुझसे वादा किया है कि जो भी मुझसे प्रेम करेंगे, उन सबकी निगहबानी वह स्वयं करेंगे। मुझे अब सत्संग या किसी चीज की चिंता नहीं, पूर्ण शांति (Complete peace) में हूँ, तैयार हूँ, जब बुलावा आ जाये।" उनके कहने से मुझे बहुत रोना आ गया। घर में कोई भी नहीं था। अनमोल ऑफिस चले गये थे, उनकी पत्नी भी कहीं काम से गयी थीं। मैं बहुत रोई। मैं रोना चाह भी नहीं रही थी कि इनको मेरे आँसू देखकर

तकलीफ होगी या मोह होगा परंतु अपने दिल के हाथों मजबूर थी। वह कुछ देर चुप रहे, फिर मेरी तरफ बड़ी मोहब्बत से देखा और कहने लगे "तुम क्यों परेशान हो। तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। मेरे सब बच्चे तुम्हारी बहुत इज्जत और प्रेम करेंगे। शर्त यह जरूर है कि तुम भी उनसे अपने बच्चों की तरह प्रेम करोगी। अपने बच्चों को जानवर भी प्रेम करता है। माँ तो वह होती है जो दूसरे बच्चों को भी अपने बच्चों की तरह प्रेम करे। अपने गुरुदेव (परम पूज्य बाबूजी महाराज) को हमेशा साथ रखना, मेरे गुरुदेव का आशीर्वाद तुम्हारे साथ पूरा है" और चुप हो गये। वह 9 या 10 जुलाई का दिन था। मेरा मन बहुत उचाट हो रहा था तभी चि. अरविंद जी से ऊपर के कमरे के लिए बात करने को कहने लगे। मन उचाट और रुलाई के कारण मैंने फोन उन्हीं को दे दिया। मैंने कहा यह सब कराना है और 16 जुलाई को गुरु पूर्णिमा भी है, चलिए लखनऊ चलें परंतु उन्होंने कहा अब क्या लखनऊ चलें। गाजियाबाद ही चलेंगे, सबसे मिलना भी हो जायेगा। मैं कहाँ समझ पाई कि वह अंतिम बार अपने पूज्य बाबूजी एवं पूज्य भाई साहब को प्रणाम करने तथा सबको देखने और मिलने के लिए जा रहे हैं।

प्रिय बब्बू भैया ने ग्वालियर भंडारे का प्रोग्राम पूछा कहने लगे "अब बेटे थक गये हैं, तुम और भैया चले जाना" इतना साफ बार बार कहने पर भी मन कहीं नहीं मान रहा था कि अब अभी इसी कुछ दिनों में चले जाएंगे।

*****

(5)

दिल्ली में अनमोल के घर अचानक डाइनिंग टेबल पर सुबह नाश्ते के बाद कहने लगे "देखो विश्वास तो करना पड़ता है और करना भी चाहिए नहीं तो दुनिया कैसे चलेगी, पर भरोसा किसी का मत करना। भरोसा सिर्फ अपने परम पूज्य बाबूजी का जो तुम्हारे गुरुदेव हैं और मेरे गुरुदेव का करना। उनका आशीर्वाद तुमको खूब है।" मैं कुछ न बोली। वातावरण करुणा में भर गया, मेरा गला रुंध गया, न मैं बोल सकी, न वो बोले। बात मेरे दिमाग में रह गयी। उस समय की हर बात अब लखनऊ के घर में इस कमरे में मूर्तिमान होकर सामने चलचित्र की भाँति चलती रहती है। उनका जाना हुआ और सब कुछ स्वतः होता गया। मैं संज्ञाहीन थी, मैं क्या कह रही थी, क्या कर रही थी, मुझे कुछ पता नहीं। कुछ सोचकर नहीं कर रही थी। अपने आप सब कुछ हो रहा था। शायद यही दृष्टा भाव होता होगा। मैं आपे में तब आई जब दिसम्बर में जगदीश यादव जी ने कहा भंडारे का निमंत्रण नहीं दिया जायेगा क्या? ईश्वर उनको इस नेक काम का नेक बदला दे। मेरा मन घबराने लगा। भंडारे के लिए मानो जगी। कमरे के निर्माणाधीन होने के कारण कुछ काम न हो सका था परंतु सोचा कि चि. आशु (पुत्र श्री त्रिभुवन सिंह जी) एवं चि. राजेश सब व्यवस्था कर लेंगे। परंतु सब ओर निराशा होने लगी। श्री त्रिभुवन सिंह भाई साहब की गहन बीमारी के कारण उनका पूरा परिवार परेशानी में था। चि. राजेश ट्रेनिंग में चले गये, दिनांक 27 दिसंबर को लौटे। कोई बच्चे जैसे शशांक, मुरलीधर, वैभव, कुलदीप जो अक्सर एक-दो दिन पहले आते थे, कोई नहीं

आ पाया था। बस ग्वालियर के बच्चे ज्योत्सना, यश वगैरह आ गए थे। दिनांक 26 दिसंबर तक कुछ नहीं हो पाया था। मैं आश्रम में आकर अपने कमरे में कुर्सी पर बैठकर कमरा बंद कर बहुत रोई, दिल बैठा जा रहा था। अपने को इतना असहाय कभी नहीं पाया था। पूज्यवर से ही कह रही थी कि मुझे मझधार में अकेला छोड़कर आप चले गये। आपके बगैर मुझसे क्या होगा और रोते-रोते मेरी आँखें लाल हो गयीं। सबसे अधिक श्री त्रिभुवन सिंह जी की तरफ चिंता थी कि कहीं उनको कुछ हो न जाये परंतु पूज्यवर की तरफ से कोई एहसास नहीं मालूम हुआ जो कि मुझे अक्सर होता है। पर तभी लगा कि अचानक मेरे सर पर किसी ने हाथ रखा। आँसू से भरी आँखें, मैं घबरा कर उठ गयी। मैंने अपनी आँखों से देखा कोई कमरे से बाहर जा रहे हैं वह परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब थे। मैं अचम्भे में थी, चुप हो गयी, दरवाजा खोल दिया परंतु उन्हीं हाथों का एहसास लगता रहा। मैंने कुछ नहीं खाया, सो गयी, उस समय कुछ न समझ पाई। दिनांक 27 तारीख को आश्रम जाने से पहले अस्पताल श्री त्रिभुवन सिंह जी को देखने गयी कि अब तो 5-6 दिन बाद ही आश्रम से लौटूँगी। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि कमलेश पत्नी श्री त्रिभुवन सिंह जी ने अस्पताल में ही मुझसे कहा दीदी जी परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब आये थे और दवाई का पर्चा (Bedhead ticket) देख रहे थे। मैंने इनसे कहा "घबराइए मत, परम पूज्य ताऊ जी आ गये हैं, सब ठीक हो जायेगा।" हालत अच्छी नहीं थी। भारी मन से मैं आश्रम 27 तारीख को पहुँची। सब काम हो गया, पता नहीं कैसे। चि. अनिल शुक्ला जी के घर के नन्हे-नन्हे बच्चों ने, यश और मनु, कुछ बड़े थे, 10 कुंतल लकड़ी रख दी, आश्चर्य नहीं है क्या? ऊपर के कमरे के परदे नहीं थे, कैसे बाजार जायें, कौन जाये, कौन लाए, उसी समय काव्या ने पर्दे मंगा दिये और वो लग भी गए। अनिल, अमित भैया ने सब काम पूरा कर दिया। हर वर्ष की भांति बीना, रमा, मेरू, रितु, ऊषा, सोनू तथा भाभी जी पत्नी श्री ईश्वर चंद्र जी, शालू तथा सबने मिलकर भंडारे का आयोजन बहुत अच्छे ढंग से पूरा कर दिया। 27 तारीख को चि. अनुराग आदि सब आ गये। सब काम पूरा हो गया। मौसम भी ईश्वर की दया से ठीक रहा। भंडारे के समाप्त होने पर मुझे लगा कि वह परम पूज्य ताऊ जी महाराज साहब का आशीर्वाद भंडारे की पूर्णता के लिए ही था और पूज्यवर की कही बात कि भरोसा केवल अपने गुरुदेव पर और मेरे गुरुदेव का करना, बिल्कुल सत्य हुई। इतनी जल्दी अपनी कही बात का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया। चारों दिन परम पूज्य बाबूजी महाराज की बहुत दया रही। आवाहन पर वह साक्षात कुछ देर तक दिखाई पड़ रहे थे। जिन्दगी में पहली बार उनके लिए दिल अथाह प्रेम से भरा हुआ मालूम हुआ। यह सब उनकी दया है।

*****

(6)

एक दिन दोपहर में अचानक कहने लगे "तुम उदास मत रहा करो क्योंकि उदासी से इंसान की हिम्मत टूटती है। इस रास्ते में हिम्मत की सख्त जरूरत है। अपने मन को दुनिया के ख्वाहिशात और नफरत से पाक साफ रखो, फिर ईश्वर और गुरुजनों की कृपा का एहसास होगा।

ख्याल रखो कि वह और मैं भी हर वक्त तुम्हारे साथ रहूँगा। बस पवित्रता से नाम लेती रहो। जिस हाल में वो रखें, उसमें खुश रहना, उदास रहना ठीक नहीं। दु:ख-सुख से ऊपर उठो, अपने ख्यालात को हमेशा ऊँचा रखना। सत्संग की सेवा, जब तक दुनिया में रहना, करती रहना। किसी से कुछ मत चाहना, बस कुछ समय रहोगी, सब अच्छे से निकल जायेगा। आश्रम छोड़ कर कहीं मत जाना। अब और सब तो तुम्हें पता ही है।"

नोट:- उनके यह कहने पर कि "एक्सटेंशन पर चल रहा हूँ, अब बहुत थोड़े दिन हैं, सलामती की दुआ कर रहा हूँ।" मेरा मन काँप जाता और न चाहते हुए भी उदासी चेहरे पर आ जाती थी। मैं अपनी उदासी और आँसू को छुपाने के लिए एकदम उनके पास से उठ कर चली जाया करती थी। जब मन कुछ संयत होता तो आ जाती थी। यही क्रम फरवरी 2019 से आरंभ हो गया था। वह तो पारखी थे सब जान जाते थे।

*****

(7)

मैंने उनको रातों रात घंटों-घंटों सबके लिए दुआ करते देखा है। मैं बहुत कहती लेट जाइए, थक जायेंगे पर उनका क्रम नहीं टूटा। मैं तो अज्ञानी थी, मेरा मन बस उनके खाने, उनके आराम और उनकी खुशी के ही त्रिकोण में घूमता रहता। मैं उस समय यह नहीं समझ पायी कि वह तो अपने गुरुदेव, अपने बाबूजी, अपने बुजुर्गों के काम के लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं और अंत में पूरा कर भी लिया। बड़े दृढ़ इच्छाशक्ति वाले महापुरुष थे। तभी तो कह पाए – "I am the most satisfied man" पूर्ण संतोष, पूर्ण शांति, पूर्ण काम को प्राप्त कर लिया और सब मोह माया से ऊपर उठ अपने बुजुर्गों में लीन हो गये।

*****

(8)

जब कभी वह कुछ लिखाना चाहते तो उसमें एक मिनट की भी देरी पसंद नहीं थी। एक बार दिवाली दूसरे दिन थी, वह दिन बृहस्पतिवार का था, मैंने सोचा सब सत्संग के लोग सुबह आयेंगे, दही बड़े बना लूँ। आप दोपहर को खाना खा कर सो रहे थे। मैंने सोचा यह सो भी रहे हैं, मैं अभी बना लूँ नहीं तो शाम को पूजा शुरू हो जायेगी। मैंने जैसे ही कढ़ाई चढ़ाई, इन्होंने मुझे बुलाया और एक चिट्ठी जो परम पूज्य ताऊ जी महाराज सिकन्द्राबाद वाले ने अपने बड़े बेटे पूज्य डॉ. हरीकृष्ण भटनागर को लिखी थी, पढ़ने को कहा। मैंने पढ़कर जल्दी-जल्दी सुना दिया, फिर कहने लगे इसे डायरी में उतार दो। मेरा मन दही बड़े और कढ़ाई में लगा था। मैंने कहा आज उतार देंगे, अभी रुक जाइए और बिना उनका उत्तर सुने चौके में चली गयी (उत्तर मुझे पता था)। उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा और ज्योति जो अपने कमरे में आराम कर रही थी उनको बुला कर वह चिट्ठी डायरी में उतरवा लिया। ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया। शाम को पूजा में उसको

पढ़वाया भी। मुझे बहुत दु:ख हुआ कि मैंने लिख दिया होता, रात में दही बड़े बना लेती। मैंने उनसे कहा आप रुक जाते, मैंने कहा तो था कि आज ही लिख दूंगी। इस पर बोले परमार्थ या अच्छे काम का जब ख्याल आए उसे तुरंत कर लेना चाहिए, नहीं तो मन का क्या? क्या पता वह ख्याल ही गुम हो जाता। चलो तुम्हारे दही बड़े बन गये। मुझे अब बहुत दु:ख होता है कि मैंने क्यों नहीं पहले उनका कहा किया।

*****

(9)

फरवरी 2019 से उन्होंने अपने गुरुदेव के नाम का तांता बाँध लिया था, उनके प्रेम को, उनके आशीर्वाद, उनके द्वारा दी गयी नेमतों को याद कर-कर के आँसू भर लेते। परम पूज्य बाबूजी के भंडारों में जब बब्बू भैया, छोटे भैया बाहर जाते, उनके लिए भंडारे की पूर्णता के लिए दुआ करते और पूरे उसी समय पर पूजा में बैठते थे। अगर बब्बू भैया या जिसके यहाँ भंडारा होता था, वह फोन करके बताता तो बहुत खुश होते और सब एक-एक दिन का अनुभव खुद लिखवाते और बाद में बब्बू भैया, छोटे भैया से पूछते और मिलाते थे। भंडारों में जाना नहीं हो रहा था पर पूरे भंडारे बहुत ही सजग रहते। जब भंडारा समाप्त हो जाता था, ईश्वर एवं बुजुर्गों का शुक्रिया अदा करते थे।

*****

(10)

भंडारे में काम करने वालों के प्रति उनका दिल प्रेम से भरा होता था। उन सबके लिए बहुत दुआ करते थे। इतना निस्वार्थ प्रेम करने वाला अब दुनिया में कहाँ। अपने बच्चों, चाहे जिस्मानी हों या रूहानी, एक सा प्रेम। बाज वख्त ऐसा भी एहसास होता था कि वो उन्हीं से ज्यादा प्रेम कर रहे हैं जो सत्संग की तरफ रजू हैं । ईश्वर उनके बच्चों को सलामत रखें, वे स्वस्थ रहें, संपन्न रहें और गुरुजनों को हमेशा याद रखें जिससे उनके गुरुदेव को प्रसन्नता हो।

*****

(11)

पूजा श्री राम मिलन यादव जी के यहाँ थी, पूजा में बहुत अच्छी हालत थी। वह बहुत खुश थे, मुझसे कहा "आज मेरी जगह परम पूज्य बाबूजी ने पूजा कराई है, बड़ी दया थी, इसका मतलब तुम समझीं। कहने लगे अब वख्त वापसी पास है। बात आई गयी हो गयी। काम बहुत बढा दिया, हर समय पूजा करना, घंटों एक मुद्रा में बैठे रहना, सेंटर बनाना, हर एक के लिए दुआ करना, पूज्य बाबूजी से अपने गुरुदेव से सत्संग के बच्चों की सलामती के लिए दुआ करना, यह काम इतना बढ़ गया कि पूज्य बाबूजी की बात सत्य हो गयी कि "बेटे! राम नाम का ताँता बाँध लो। हर

25 तारीख को कुछ न कुछ होता था, पर मैं तो अज्ञानी थी। मेरे सामने कहते थे बहुत रोती हो परंतु फिर भी मन समझा देता। पूज्य बाबूजी कहने लगे थे 1981 से वक्त वापसी है 1987 तक रहे थे न। 2019 में हर दिन ऐसी बातें बहुत कहने लगे थे, यह साल वापसी है। दिल घबराता था पर विश्वास नहीं करता था। दिनांक 25 जून को दिल्ली जाने की तैयारी थी। मुरलीधर हम लोगों को लेने आए थे। सुबह-सुबह 5:30 बजे पर मैं ताला खोलने गयी और मुरलीधर मेरे साथ ही आ के गैलरी में झाड़ू लगाने लगे। जैसे ही मैं गेट तक गयी, मैंने देखा एक सफेद कपड़े पहने गंभीर पुरुष खड़े थे। मैंने कहा आप कैसे खड़े हैं। वह मेरी बात का जवाब न देकर मुझसे पूछा "आपके मालिक बीमार हैं", मैंने कहा हाँ। वह बोले वह बीमार नहीं उनका बुलावा आ गया है। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने उनसे कहा ठीक है और मुरलीधर जो पास ही थे, उनसे 10 रुपये दिलवा दिए। बात उस समय बिल्कुल साधारण लगी थी और पूरी तरह भूल गयी परंतु जिस समय उनकी अस्थियाँ समाधि में रखी गयीं और सब फूल चढ़ा रहे थे, एकदम से वह चेहरा आँखों के सामने आ गया और मैं घबरा गयी। हर 25 तारीख को उनके लिए पूजा विशेष होने लगी। ओम शान्ति का जाप होने लगा और बच्चों को फल मिठाई आदि बाँटा जाने लगा है।

कहाँ दिल जरा से विछोह के ख्याल से काँप जाता था, ऐसा हो जायेगा तो क्या होगा परंतु वज्र से भी कठोर दिल वाला मानव सब सह लेता है, यही विडंबना है।

*****

पूज्यवर के सद्विचार

पूज्यवर के कुछ सद् विचार जो उन्होंने विभिन्न सत्संग व भंडारों में बार-बार अपने मुखारबिन्दु से व्यक्त किए हैं, उन्हें एक माला की तरह पिरोने का प्रयास किया है। ये वो पुष्प हैं जो परमार्थ की सुगंध व रस से परिपूर्ण हैं और आत्म के लिए एक पथ प्रदर्शक हैं:-

1. प्रेम करो, प्रेम सीखो, प्रेम सिखाओ और प्रेमी बन जाओ। प्रेम ही ईश्वर है। निःस्वार्थ गुरु प्रेम ही ईश्वर प्रेम में बदल जाता है।
2. यदि आपने प्रेम करना सीख लिया है और किसी को नहीं सिखाया तो वह भी complete नहीं है। ईश्वर जब आप से पूछेगा, तो आप क्या बताएंगे कि जब आपको यह आता था तो दूसरों को क्यों नहीं बताया।
3. अपनी कमियां देखो और उसे दूर करने की कोशिश करो और दूसरों की अच्छाईयां देखो तथा उससे सीख लो।
4. मन को कभी खाली मत रहने दो, किसी न किसी काम में लगाए रखो। अच्छा है, परमार्थ का काम हो, नहीं तो कोई अच्छा काम हो। दुनियावी न हो या कम से कम हो।

5. आत्मा के तीन गुण हैं :-
   (अ) Everlasting: आत्मा की कभी मौत नहीं होती।
   (ब) All knowledge: आत्मा को ही पूर्ण ज्ञान होता है।
   (स) All bliss: आत्मा का किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं होता है।

6. हमारे सूक्ष्म में चार चीजें होती हैं – मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। सबसे अच्छा है, सतमन पर रहें, सतबुद्धि पर रहें और चित्त में सत् का वास हो।

7. अगर किसी को भरोसा हो जाए कि ईश्वर है और सब जगह है, तो बुराई का नामोनिशान मिट जाए।

8. बुजुर्गों का जन्मदिन एवं निर्वाण दिवस मनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप उनके गुणों को अपनाएं। एक साथ सारे गुण नहीं अपनाए जा सकते। कोई एक गुण जो सबसे सरल हो अपनाने की कोशिश करें। ऐसा करके साल में एक बुजुर्ग के दो गुण तो अपनाएं ही जा सकते हैं।

9. सभी अभ्यासी हैं। सत्संग में मिलजुल कर अभ्यास करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। सबसे अच्छा यह है कि सत् पर हर वक्त रहें। जहाँ भी गिरावट हो, तो अपनी सोहबत और खाने को देखें तथा अपने विचारों पर हर वक्त निगाह रखें। यह जीवन भर का सौदा है, एक दिन का नहीं।

10. ईश्वर एक है और उसको पाने का तरीका भी एक ही है। सभी रास्ते उसी ईश्वर की तरफ जाते हैं बशर्ते कि वह रास्ता सही हो।

11. मन पर कभी भरोसा मत करो। परम पूज्य लालाजी महाराज कहते थे कि समंदर की लहरों को एक बार रोका जा सकता है किंतु मन को नहीं। सबसे अच्छा है कि उसे अपने गुरु को दे दें और उनकी याद में लगाए रखें।

12. याद और ख्याल में से ख्याल बेहतर है कि आप हर वक्त उनका यानी अपने गुरु का ख्याल करके उसमें डूबे रहते हैं।

13. याद आएगी तभी दया होगी। याद को पलट दें तो दया होती है। अगर आपको उस ईश्वर की जिसने आपको पैदा किया याद नहीं आती, तो ईश्वर को भी आपकी याद नहीं आएगी।

14. ईश्वर को आपने देखा नहीं, गुरु को आपने देखा है। नररूप हरि की इसीलिए तुलसीदास जी ने भी वंदना की है।

15. आपने मन में परमार्थी या अच्छा विचार किया और उसे एक्शन में नहीं लाए। वह भी शेखचिल्ली जैसा ही है कि आप सिर्फ सोचते रहे उससे कुछ नहीं होता। उसको Implement करने की भी कोशिश करनी चाहिए।

16. जब आप ईश्वर की तरफ एक कदम चलते हैं तो वह ईश्वर दस कदम चलता है। आपकी तरफ से ग्यारह कदम तो अपने आप ही पूरे हो जाते हैं।

17. हर मनुष्य तीन लोगों का सदैव ऋणी रहता है। माता का, पिता का और गुरु का। माता का क्योंकि वह नौ महीने अपने गर्भ में रखकर अपनी खुराक से आपको खुराक देकर आपका पालन करती है, पिता का क्योंकि उसने आपकी परवरिश का इंतजाम किया और गुरु का क्योंकि उसने आप को सन्मार्ग पर चलना सिखाया और जन्म - जन्म के बंधनों से छुड़ाकर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया।

18. अपने विचारों को हर वक्त देखते रहिए अच्छा तो यह है कि सत् विचार या परमार्थी विचार हों, यदि नहीं तो कम से कम अच्छे विचार हों। यदि विचार बुराई की तरफ जाते हैं तो उसका कारण देखिए और उसे दूर करने की कोशिश करिये। ज्यादातर आप देखेंगे कि खाना और सोहबत ही इसके मुख्य कारण मिलेंगे।

19. खाना कहाँ खाया गया और खाते समय कैसे विचार थे। खाना बनाने वाले के भी विचार बहुत Matter करते हैं।

20. What to eat, when to eat and how much to eat, यह तो मेडिकल में भी पढ़ाया जाता है। खाना शरीर की रक्षा के लिए खाया जाना चाहिए न की जायके के लिए।

21. सारी दुनिया जल जाती है, ईश्वर का नाम फिर भी रह जाता है। सारी लंका जलने के बावजूद भी विभीषण का घर बच गया क्योंकि वहाँ ईश्वर का नाम बसा था। इसलिए पहले अपने गुरु से सही तरीके से जुड़ें।

22. गुरु से मांगो तो सिर्फ उसका प्रेम मांगो, बाकी वह सब दिला देगा। यही पूजा की पराकाष्ठा है कि जब राम कबीर को याद करने लगें, यानि गुरु शिष्य को याद करने लगें।

प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय।
जब मैं था तब गुरु नहीं अब गुरु है मैं नाही।।

23. नर रूप हरि को सब ने देखा है। गुरु जीवित आदमी होना चाहिए। गुजरे हुए से कोई फायदा नहीं होता सिर्फ वातावरण शुद्ध होता है।

24. हमारे गुरुदेव कहते थे कि गर्दन झुका कर मत आना, नहीं तो गर्दन काट दूंगा। इसका सरल तरीका है कि किसी सतोगुणी मन से जुड़े रहो, तो सब ठीक रहेगा।

25. पता नहीं कहाँ रुकावट आ जाए। तो एक जो है प्रेम उसको पकड़ लें कि हम हर एक से प्रेम करें। पहले जो आप से परिचित हैं। प्रेम करने का मतलब यह नहीं है कि उसमें दिखावा हो। बल्कि हमारा व्यवहार व स्वभाव भी ठीक वैसा ही बन जाए, जैसा कि हम और आप चाहते हैं। यह कह देना कि हम उनसे प्रेम करते हैं, झूठ है। बाप बेटे से प्रेम करता है कि हमारे

बुढ़ापे का सहारा होगा। बेटा बाप से प्रेम करता है कि मरने के बाद इनकी दौलत हमें मिल जाएगी। तो यह प्रेम नहीं है, सौदेबाजी है। यही मेरे गुरुदेव कहते थे कि बेटे सौदेबाजी है, प्रेम नहीं। प्रेम तो वह है कि जिसकी याद के बगैर रहा न जाए और उसकी (प्रेम की) वजह भी न मालूम हो। तो इसलिए हर वक्त याद करते रहना ही सबसे बड़े प्रेम की निशानी है।

26. हर प्राणी को यह पूरा यकीन करना होगा कि ईश्वर है, वही सृष्टि का रचने वाला और उसका नाश करने वाला है।

27. यह दुनिया उसी की बनाई हुई है और उसी के अनुसार चलेगी। इसमें किसी प्राणी का कोई दखल नहीं हो सकता है।

28. ईश्वर का न कोई रूप है, न कोई नाम है, प्राणी को स्वयं उसका नाम और रूप निर्धारित करना होता है। जिस नाम से पुकारोगे, उसी नाम से वह Respond करेगा (उत्तर देगा)। जिस रूप से देखोगे, उसी रूप में दिखाई देगा।

29. हर प्राणी की यह दुनिया कर्मयोनि, भोगयोनि और मोक्षयोनि के लिए ही है।

30. ईश्वर की बनाई हुई हर चीज से प्रेम करो। इसीलिए हमारी शिक्षा में, मुख्य है प्रेम करो, प्रेम सीखो, प्रेम सिखाओ।

31. हर प्राणी को सदा Think Good, Do Good, Be Good (अच्छा सोचो, अच्छा करो, अच्छा बनो) के फार्मूले को जीवन में अपनाना चाहिए।

32. जिस हाल में ईश्वर ने रखा है, उस हाल में खुश रहने की पूरी कोशिश करें क्योंकि यह हमारी भोगयोनि है और इसके लिए भी ईश्वर ने निश्चित समय या उम्र दिया है। इसलिए उसमें सुख-दुःख लगे रहेंगे, उसको खुशी-खुशी भोगो और ईश्वर की नेमत समझ कर भोगो क्योंकि यह तो हमारे ही भोग हैं, फिर काहे का गिला शिकवा यह तो उसकी दया है कि वह हमें भोगों को भोग कर मुक्ति का रास्ता खोल रहा है, जो कि हमारे जीवन का लक्ष्य है।

33. उसकी दी हुई नेमतों का कभी दुरुपयोग न करें बल्कि उसका सदुपयोग मानव मात्र की भलाई के लिए करें।

34. कभी बुरा न सोचो, न देखो, न कहो, न करो, यही इंद्रियों का सदुपयोग है तथा उसकी दी हुई नेमतों का सदुपयोग है।

35. हमेशा अपनी मौत पर नजर रखो और यह सोंचो समझो कि जो समय बीत गया, उसको भूल जाओ, बचे हुए समय का सदुपयोग करके अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करो।

36. उस मालिक पर पूरा भरोसा रखो कि तुम्हारा भविष्य अच्छा होगा क्योंकि वह न्यायकारी है, हर व्यक्ति के साथ न्याय करता है। यही तो उसका सबसे बड़ा गुण है।

37. ईश्वर के गुणों को अपनाओ और उसकी जुबान से प्रशंसा करो, मन से ग्रहण करो और बुद्धि से पालन करो।

38. ईश्वर के छः गुण हैं - दया, दान, दीनता, क्षमा, सच्चाई और प्रेम। ईश्वर को प्रेम, सच्चाई, दीनता बहुत प्रिय हैं। जिसने इन गुणों को अपनाया है, वह ईश्वर को बहुत प्रिय होता है। इसीलिए मनुष्य जीवन की महानता है।

39. मानव के छः अवगुण हैं, उनका धीरे-धीरे त्याग करो। वह इस प्रकार हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अहंकार। जो हर व्यक्ति में रहते हैं। वह अपने जीवनकाल में ही इन्हें छोड़ सकता है।

40. मनुष्य जीवन का लक्ष्य यह है कि जिस व्यक्ति में वो ईश्वरीय छः गुण हों, उसकी तलाश करे, सोहबत उठाये और यदि उसका मन पूर्ण तरह से समर्पित हो जाए तो उसी को अपना गुरु, गाइड, रहबर मानकर उसके जीवनकाल में उस जैसा बनने की कोशिश करे। यदि न बन सके, तो उसके द्वारा नियुक्त या बताए हुए व्यक्ति को साक्षी या मुर्शिद मानकर उसके साथ रहकर अपने गुरु जैसा बनने की कोशिश आखिरी वक्त तक करें। जो लोग ऐसा नहीं करते और अपनी अक्ल लगाते हैं, इसका मतलब कि उन्हें अपने गुरु पर भरोसा नहीं है और अपने मन के गुलाम हैं।

41. ईश्वरीय या गुरु के गुण एक साथ नहीं आते हैं और वो लोग भाग्यशाली होते हैं जो एक ही जन्म में लक्ष्य पूरा कर लेते हैं।

42. हर व्यक्ति स्वयं अपना आकलन (Assessment) कर सकता है। यदि ये गुण आ गये हैं तो रास्ता सही है। यदि नहीं तो कहीं न कहीं कमी है, उसको दूर करने की जल्द से जल्द पूरी कोशिश करें।

43. दुनिया की सभी चीजें इन गुणों के ग्रहण करने में बाधक हैं। उन सब को मन से त्याग दो, उनको त्यागना ही असली वैराग्य है।

44. ईश्वरीय गुण या गुरु जैसा बनने के लिए बाधक शैतान या माया है, जिसके तीन रूप हैं (अ) स्त्री, (ब) पैसा, (स) अहंकार। उनके कारण अलग-अलग हो सकते हैं, रूप यही हैं।

45. माया हर व्यक्ति को बिना परीक्षा (टेस्ट) लिए मायापति (ईश्वर) तक नहीं पहुंचने देती। स्वयं देवी सीता को जो भगवान राम की पत्नी थीं, कैसी-कैसी अग्नि परीक्षा देनी पड़ी।

46. अपने को ही पहचान लेना ईश्वर को जान लेना है। पूर्ण ईश्वर को कोई नहीं जान सकता है, वह अगम है। न कोई ईश्वर को पूर्ण रूप से जान सका है, न जान पाएगा।

47. ईश्वर को व्यक्ति न ज्ञान से, न भक्ति से, न कर्म से जान सका है। केवल प्रेम से और उसका दास बनने से उसकी अनुभूति या अनुभव किया जा सकता है और यही हमारे यहाँ का रास्ता है, जिसके अधिष्ठाता परम पूज्य लालाजी महाराज साहब (परम संत रामचंद्र जी सहाय) हैं। मेरे पूज्य गुरुदेव डॉ. श्री कृष्ण लाल जी और मेरे मुर्शिद कामिल पिता श्री डॉ. श्याम लाल सक्सेना जी ने अपने समस्त जीवनकाल में यही गुण और रास्ता अपनाया और जीवन को सफल किया और लाखों का मार्गदर्शन किया।

48. न हमारा कोई मजहब है, न कोई धर्म है, न हमारा किसी मजहब या धर्म से वास्ता है। हम मनुष्य हैं, हमें ईश्वर ने मनुष्य पैदा किया है। अच्छा मनुष्य बनना ही हमारा धर्म है। मुकम्मिल मनुष्य बनना ही हमारा मजहब है। यही हमारे जीवन का असली लक्ष्य है। हम हर धर्म और मजहब का आदर करते हैं, परंतु लक्ष्य हमारा मुकम्मिल इंसान बनना ही है।

49. अपनी गलती व कमी ढूंढो, दूसरों की नहीं।

50. स्वयं बाती से जलो, उजाला फैलेगा।

51. दुखियों के आँसू पोछना यज्ञ से बढ़कर है।

52. दया पर नहीं अपनी कर्मठता पर जियो।

53. मात्र उपदेश नहीं स्वयं उदाहरण बनो।

54. जैसा दूसरों से चाहो स्वयं वैसा करो।

55. बेसहारों को सहारा देना महापुण्य है।

56. दृढ़ संकल्प सफलता का मंत्र है।

57. नि:स्वार्थ सेवा सच्ची पूजा है।

58. संपूर्ण विश्व को परिवार मानो।

59. गुरु से बेलौस प्रेम करो।

60. गुरु की बेलौस सेवा करो।

61. गुरु के रूप का हर वक्त ध्यान करते रहो।

62. हर समय ओम शब्द का उच्चारण सच्चाई के साथ करते रहो।

63. भूत को भूल जाओ। वर्तमान को अच्छी तरह पूर्ण सूझबूझ विश्वास के साथ जियो। भविष्य स्वयं अच्छा हो जाएगा।

64. अपने गुरु के आदेश का हूबहू पालन करो।

65. बेलौस सेवा और बेलौस प्रेम ही परमार्थ की सफलता की कुंजी है ।

66. सिलसिले के बुजुर्गों की बहुत इज्जत करें।

67. प्रेम ही जगत का सार है, बाकी सब बेकार है।

68. प्रेम, सेवा, सच्चाई से ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

69. अपनी जिम्मेदारीयां किसी पर भी न छोड़ें, अपने जीवन काल में ही पूरी कर लेनी चाहिए। यहाँ तक कि अपनी औलाद पर भी नहीं।

70. भरोसा केवल अपने गुरु का करें। जैसे पूजने योग्य केवल ईश्वर हैं उसी तरह भरोसा करने योग्य केवल गुरु हैं और कोई नहीं। यही परमार्थ का मूल मंत्र है।

71. पूजा में तीन चीजों की जरूरत होती है:
    अ) Courage हिम्मत
    ब) Regularity and complete faith पूर्ण निस्बत
    स) Purified heart पवित्र हृदय

72. जिक्र करिये, फिर गुणों को अपनाइए, फिर गुरु को चित्त में बैठा लीजिए ।

73. यदि आप गलत आदमी से मिल लिए, तो वह आप को तबाह कर देगा। चाहे आप हर वक्त गुरु के ख्याल में रहते हों, तब भी बुराई का असर जरूर होगा। इसलिए कोशिश करनी चाहिए आग से खेलें नहीं ।

74. हमें जीवन भर Learner (विद्यार्थी) बने रहना चाहिए क्योंकि संसार का कोई भी प्राणी पूर्ण नहीं है। अच्छी बातें जहाँ मिले वहीं से उसे ले लेना चाहिए।

75. सुबह आँख खुलते ही चारपाई पर बैठकर हर व्यक्ति को प्रार्थना करनी चाहिए। बिस्तर पर ही बैठ कर यह ख्याल पुख्ता करें कि उसके गुरुदेव उसके सामने बैठे हैं और उनसे वह प्रार्थना कर रहा है कि हे गुरुदेव आज मेरे दीन और दुनिया दोनों की रक्षा कीजिएगा और हर समय मेरे साथ रहिएगा ख्याली तौर पर उनके पैर को छूकर तथा उनसे आशीर्वाद लेकर बिस्तर को छोड़ दें।

आपकी अनुगामिनी
सहधर्मिणी आशा सक्सेना

दर्द दिल की आवाज

ॐ

मुझको तलाश तेरी, मुझे तेरी जुस्तजू है ।
मुझको तमन्ना तेरी, मुझे तेरी आरजू है ।।
किस काम का यह जीवन, तेरी राह चल न पाई ।
तुझसे न दिल लगाया, तुझको न गर रिझाया ।।
तुम बिन है सूनी दुनिया, सुनसान चारसू है ।
आँखों में हो तसव्वुर, दिल में हो याद तेरी ।।
तेरी याद की महक से, महक जाये दुनिया मेरी ।
दौलत भी मेरी तू है, मेरी जिन्दगी भी तू है ।।
तेरी बंदगी की लज्जत, कोई मेरे दिल से पूछे ।
तुझे याद करके रोना, यही मेरी बंदगी है ।।
हूँ खुशनसीब मुझ पर, नजरे करम है तेरा ।
तेरे करम से ही, भव पार होगा मेरा ।।
मेरे दिल में तू ही तू है, मेरा एक तू ही तू है ।

*****

ॐ

देखा है मैंने आपको, रूह बरूह अभी अभी।
बस नाम सुन लिया, कशिश हो गयी तभी।।
लगता है हो करीब मेरे, आज भी अभी।
सुनते हैं लोग कहते हैं, वह थे यहाँ कभी।।
मैं तुमको देखती हूँ, हर शै में सब कहीं।
फिर कैसे हो यकीं, कि तुम हो यहाँ नहीं ।।
अब तक ये जिन्दगी है, जमीं आसमा यहीं है।
हे नाथ तुम यहीं हो, तुम यहीं हो सब कहीं ।।

*****

ॐ

आसरा इस जहाँ का मिले न मिले।
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए ।।
चांद तारे फलक पर दिखे न दिखे।
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिए ।।
यहाँ खुशियां है कम और ज्यादा है गम।
जहाँ देखो वहीं है भरम ही भरम ।।
मुझको तेरा इशारा सदा चाहिए।

मेरे दिल में शमा दीन की जले न जले ।
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिए ।।
मेरी धीमी है चाल, तेरा पथ है विशाल।
हर कदम पर मुसीबत है, अब तू ही संभाल ।।
मेरे पैर थके हैं चले न चले।
मेरे दिल को सहारा तेरा चाहिए ।।
मेरी चाहत की दुनिया न उजड़े कभी।
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए।।
*****

ॐ

न ख्याले दीन ईमां, न ख्याले बंदगी है।
तेरे बगैर जीना, यह कैसी जिन्दगी है।।
तू निगाहें रूप परवर, तू बहारे आशिकी है।
तुझे देखना इबादत, तेरी याद बंदगी है।।
तेरे दर पे सजदा करना, तुझे याद करके रोना।
अब यही है मेरी पूजा, यही मेरी बंदगी है ।।
तू जाने या न जाने, तू माने या न माने।
हुई जिन्दगी ये दूभर, तेरी बंदगी सहारा ।।
मेरे नाज सहने वाले, मेरा मान रखने वाले।
तेरा गम है बस हकीकत, मुझे जिन्दगी से प्यारा।।
*****

ॐ

याद आते हैं आप घड़ी दर घड़ी।
मन ये कहता है अब वो यहाँ है नहीं।।
आँखें कहती हैं सूरत न दिखे कहीं।
बुद्धि कहती है ये तो है दुनिया के रीति।।
कोई कहता है मैं हूँ यहीं सब कहीं।।
मन लगाओ तुम राम के नाम में,
रघुवर श्री कृष्ण और श्याम में।
मुझको पाओगी तुम इन्हीं में कहीं।।
अपने गुरुवर का तुम ध्यान करती रहो।
मेरे गुरुवर का भी तुम सहारा लो।।
मेरा दामन तुमसे जुड़ा है तो क्यों
मन उदासी करें क्यों तू घड़ी दर घड़ी।।
*****

ॐ

अर्श

भव से पार कर देना मुझको, भव से पार कर देना
नाव भँवर मझधार पड़ी है, हूँ दुःखी संसार में।
शब्द साखी क्या सुनूँ मैं, जाप सत्संग क्या करूं मैं,
करते करते थक गयी।
मुझको जीता न समझो, जीते जी मैं मर गयी।।
तुमने मेरी बाँह पकड़ी, अब तुम्ही को लाज है।
सर्व समर्थ नाथ मेरे, अब दया कर दीजिए।
कुछ नहीं अब याद मुझको, बस तुम्ही आधार हो।।

*****

ॐ

आपकी यादों से जीने का सहारा मिल गया।
किश्तिये बेना को खुद अब किनारा मिल गया ।।
किस कदर वख्ते हँसी हमने गुजारा आप संग।
उड़ गये दिन पर लगाकर शाम ढलकर आ गयी ।।
मंजिले मकसूद तक लाखों को पहुंचाते रहे।
आपके फजलो करम से अपनी मंजिल आ गयी ।।
जिस तरह आप गये खुशो खुर्रम अपने आप से
चाहती हूँ इस जहाँ से यूँ ही अपना कूच हो ।।

*****

ॐ

होते ऐसे संत कहाँ। पाई ख्याति अनंत यहाँ।।
ऐसा था व्यक्तित्व महान। सबका किया परम कल्याण।।
दिया सभी को उत्तम ज्ञान। रंच न था मन में अभिमान।।
दूर किए सब की सब व्याधि। पाई 'गुरु' की सफल उपाधि।।
अपने गुरु की रखी बात। कभी न देखा दिन या रात।।
शिष्य बने इतने सारे। सबके थे बस आप सहारे।।
रही सभी की बस यह 'आशा'। मन में सबके थी अभिलाषा।।
सुने आपके सब उपदेश। दर्शन पाते रहें विशेष।।
रहे प्रेरणा के सुंदर स्रोत। किया ज्ञान से सबको प्रोत।।
मेरा अंतिम यही प्रणाम। सद्गति दे मेरे प्रभु राम।।

*****

ॐ

तेरे हुस्न जैसी नकहत, न हुई, न है, न होगी।
कहीं और ऐसी सूरत, न हुई, न है, न होगी।।
तुझे दिल से चाहता हूँ, ये तुम्ही को बस पता है।
किसी और से मोहब्बत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
कोई होगा इब्ने मरियम, नहीं रखते कुछ खबर हम।
किसी गैर की जरूरत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
तेरा दर ही मेरा किबला, मेरा सर यही झुकेगा ।
किसी और की इबादत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ....
तू जहाँ है वहाँ उजाला, तू नहीं तो है अंधेरा।
तेरे कदमों जैसी बरकत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ....
नहीं शर्त कोई मजहब, यहाँ एक रंग हैं सब।
कहीं और ऐसी रंगत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
कहीं हमने जब पुकारा, दिया आपने सहारा।
किसी और से शफक्कत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
राहे नक्शबंद पैगम, तेरा फैज जारी हर दम।
कहीं और ऐसी हालत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
खुदा तुझको रखे कायम, तेरा दर रहे सलामत।
किसी और की जरूरत, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
सबको गले लगाया, सन्मार्ग पर चलाया।
कहीं ऐसी रहनुमाई, न हुई, न है, न होगी।। तेरे हुस्न ...
*****